39

अपने शत्रु को जानें

(12:1-7, 9, 10)

अध्याय 11 की अन्तिम आयतों में हमने सातवीं तुरही बजते सुनी, क्योंकि न्याय का समय आ गया था। हमें लग सकता है कि क्रोध के सात कटोरे उसके बाद होंगे, परन्तु वह शृंखला 15 और 16 अध्यायों तक टाल दी जाएगी। इसके बजाय अध्याय 12 से 14 में हमें परमेश्वर और मसीह के शत्रुओं का परिचय दिया जाता है।[1] अध्याय 12 में हमारी मुलाकात सताव कराने वाले अर्थात शैतान से होती है। अध्याय 13 में शैतान के दो साथी, पशु और झूठा भविष्यवक्ता मंच पर आते हैं। फिर अध्याय 14 संक्षेप में प्रलोभन देने वाले उस बड़े बाबुल का उल्लेख करता है।

इस पाठ के साथ अध्याय 12 का हमारा अध्ययन आरम्भ होता है। यह अध्याय निर्णायक है। विद्वान आमतौर पर सहमत होते हैं कि इसमें प्रकाशितवाक्य का दूसरा मुख्य भाग आरम्भ होता है। पुस्तक का पहला भाग, मुख्यतया कलीसिया और रोम के बीच युद्ध पर केन्द्रित है, जबकि दूसरा भाग दृश्य के पीछे की लड़ाई अर्थात मसीह और शैतान के बीच आत्मिक युद्ध अर्थात भलाई और बुराई के बीच के युद्ध पर अधिक केन्द्रित होगा।

इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर के सबसे बड़े शत्रु शैतान का परिचय कराना है। इस भाग में पता चलता है कि मसीही लोगों पर आने वाली समस्याओं के लिए शैतान जिम्मेदार था और इसमें बताया गया है कि शैतान मसीही लोगों को क्यों तुच्छ मानता है। इसमें ''हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों हो रहा है?''; ''हमने ऐसा क्या किया है, जो हमारे साथ ऐसा हो रहा है?''; ''रोम हमसे इतनी घृणा क्यों करता है?'' जैसे उन प्रश्नों के भी उत्तर हैं, जो आरम्भिक मसीही लोगों द्वारा पूछे गए होंगे, वचन में यहां स्पष्ट हो जाता है कि *रोम* को उनसे इतनी घृणा नहीं थी, परन्तु *शैतान* को अवश्य थी। रोम तो केवल शैतान के हाथ का खिलौना था।

मसीही होने के कारण हमारा युद्ध अन्याय और दुर्व्यवहार से होगा। इस अध्याय की शिक्षाएं पहली शताब्दी में परमेश्वर के लोगों से सीधी बात करने की तरह हमारे साथ भी बात करती हैं।

अध्याय 12 की बातें इतनी नाज़ुक हैं कि इस अध्याय को तीन पाठों में पूरा करेंगे। पहले पाठ में जो पहली छह आयतों पर केन्द्रित है, शैतान का परिचय होगा। सांसारिक युद्ध पर पाठ्य-पुस्तकें कहती हैं कि शत्रु को हराने के लिए पहले शत्रु की कमज़ोरियां पता होनी

आवश्यक हैं। यही नियम मरने तक के उस आत्मिक युद्ध पर भी लागू होता है, जिसमें आप और मैं लगे हुए हैं (इफिसियों 6:11-18)।

भयानक शत्रु (12:1-4)

शत्रु का निशाना: स्त्री (आयतें 1, 2)

पद्य आरम्भ होता है, ''फिर स्वर्ग पर एक बड़ा चिह्न दिखाई दिया'' (आयत 1क)। ''चिह्न'' प्रेरित यूहन्ना का पसंदीदा शब्द था; सुसमाचार के उसके वृत्तातों में यह शब्द कई बार और प्रकाशितवाक्य में सात बार आता है।[2] अनुवादित शब्द ''चिह्न'' के यूनानी शब्द का अर्थ कुछ ''हैरान करने वाला, बहुत निराला, जिसे अलग से पहचाना जा सके, कोई असामान्य घटना, जो प्रकृति के सामान्य व्यवहार से ऊपर हो''[3] है। NIV बाइबल में इसे ''एक बड़ा और अद्‌भुत चिह्न'' बताया गया है।

यह चिह्न ''स्वर्ग में'' दिखाई दिया। संदर्भ में ''स्वर्ग'' शब्द यहां परमेश्वर के विशेष निवास स्थान के लिए नहीं, बल्कि ''आकाश के तारों'' वाली जगह अर्थात नीले आसमान को कहा गया है (आयत 4)। डब्ल्यू. बी. वेस्ट ने लिखा है, ''यूहन्ना ने उस आकाश में, जो उसके ऊपर था और जो आकाश हम सबके ऊपर है, एक बड़ा चिह्न देखा।''[4] इस प्रेरित ने तारों भरे आकाश के बड़े परदे पर दिखाई गई आकृतियों को देखा।[5]

यूहन्ना द्वारा देखा गया, ''बड़ा चिह्न'' यह था: ''एक स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी, और चान्द उसके पांवों तले था, और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था'' (आयत 1ख)। सूर्य, चांद और तारों के सम्भावित संकेतों में महत्व के बारे में कई दिलचस्प अनुमान लगाए जाते हैं[6]; परन्तु जैसा कि आम होता है, पूरे महत्व का पता सम्पूर्ण दृश्य से लगता है।[7] स्त्री के आकाश के बड़े परदे पर दिखाई देने की कल्पना करें: उसने सूर्य की किरणों से बुना चमकीला वस्त्र पहना हुआ है, जिसका एक-एक धागा चमक रहा था। उसके सिर का मुकुट चमचमाते सफ़ेद और आग जैसे लाल बारह हीरों से जड़ा था। उसके पांव चांद पर रखे गए थे।[8] वह चकाचौंध करने वाले तेज से भरी प्रतापी स्त्री थी![9]

तौ भी किसी आम स्त्री की तरह वह भेद्य थी, क्योंकि ''वह गर्भवती हुई, और चिल्लाती थी; क्योंकि उसे प्रसव की पीड़ा लगी थी; और वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी'' (आयत 2)। हर स्त्री जिसने बच्चे को जन्म दिया हो (और हर पुरुष जो उस कष्ट के समय अपनी पत्नी के पास खड़ा हो) इस रूपक की कल्पना कर सकता है। जन्म दे रही स्त्री के मन में कोई और विचार नहीं होता और न उसमें सामर्थ होती है। जन्म देने के समय यदि उस पर आक्रमण हो जाए, तो वह अपने आप को बचा नहीं पाएगी।

उस स्त्री के सिर पर मंडराते खतरे को देखने से पहले (आयत 3) हमें ''सूर्य को ओढ़े, तारों के मुकुट, चांद को पैरों तले''[10] रखने वाले को पहचानना आवश्यक है। इस पर कि वह कौन थी या किसे दर्शाती थी विवाद है।[11] यह बात कि 12:5 में उसके बच्चे को मसीह के रूप में पहचाना गया ''मध्यकालीन कलीसिया द्वारा उसे यीशु की माता मरियम

के साथ मिलाया गया और यह व्याख्या आज भी कैथोलिक लोगों की परम्परा में पाई जाती है।''[12] केवल 1 और 2 आयतों को ही लें तो हम इस व्याख्या से सहमत हो सकते हैं, परन्तु संदर्भ स्त्री के विशेष व्यक्ति होने को बाहर करता है। विलियम बार्कले ने ध्यान दिलाया है कि ''वह इतना स्पष्ट अलौकिक व्यक्ति है कि उसे किसी भी मानवीय जीव से मिलाना सम्भव नहीं है।''[13] बाद में उस स्त्री के सबकी माता के रूप में दिखाया गया है (12:17), जो मरियम से मेल खाता प्रतिनिधित्व नहीं है।

वह स्त्री एक व्यक्ति नहीं है, जिस कारण कई लोग उसे सांसारिक इस्राएल में विश्वासी लोग बताकर उसे ''विश्वासी इस्राएल'' का नाम देते हैं। इस्राएली जाति को अलग करने का परमेश्वर का उद्देश्य संसार में मसीहा को लाना था (मीका 5:2)। इस्राएल को परमेश्वर की दुल्हन कहा गया था और आमतौर पर उसकी तुलना गर्भवती स्त्री से की जाती थी, (यशायाह 9:6; मीका 4:9, 10.) उस स्त्री का स्वर्गीय लिबास हमें याकूब/इस्राएल के घराने से जुड़े यूसुफ का स्वप्न का स्मरण कराता है (उत्पत्ति 37:9-11)। बारह तारे, बारह पुरखाओं को दर्शाते हो सकते हैं।

यीशु के जन्म से पूर्व यह व्याख्या सही काम करती है, परन्तु यह पढ़ने के बाद कि वह ''परमेश्वर के पास उठाया गया'' (12:5) यह अलग हो जाती है। मसीह के स्वर्ग पर उठाए जाने के बाद अजगर ने स्त्री को सताया (12:13); और यह तो इतिहास है कि ऊपर उठाए जाने के बाद, सांसारिक इस्राएल नहीं, बल्कि उसे सताने वाला सताया गया था (2:9; 3:9)। इसके अलावा उस बच्चे के ''ऊपर उठाए जाने'' के बाद स्त्री की रक्षा परमेश्वर द्वारा की गई (12:6, 14-16), परन्तु नया नियम बताता है कि परमेश्वर सांसारिक इस्राएल के साथ अब प्राथमिकता वाला व्यवहार नहीं करता (रोमियों 2:28, 29; 10:12; गलातियों 3:26-29)।

यह स्पष्ट लगता है कि आयत 5 के बाद स्त्री कलीसिया ही है। पूरे प्रकाशितवाक्य में सताई जाने वाली कलीसिया ही है और कलीसिया ही है, जिसकी परमेश्वर रक्षा करता है। इस कारण ''यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य के अति प्राचीन टीकाकार उस स्त्री को कलीसिया मानते थे।''[14] परन्तु यह परिचय इस अध्याय की पहली पांच आयतों से उलझता लगता है, जिनमें स्त्री के यीशु को जन्म देने की बात है। कलीसिया ने यीशु को नहीं, बल्कि यीशु ने कलीसिया को जन्म दिया (मत्ती 16:18, 19)।

स्पष्टतया यह स्त्री पहले एक बात का और फिर किसी और बात का प्रतिनिधित्व करती, उन बदलने वाले प्रतीकों में से एक है, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिए नये हैं। इस समस्या को सुलझाने का सबसे आसान ढंग शायद अपने आप को सांसारिक इस्राएल और नये नियम वाले आत्मिक इस्राएल में सम्बन्ध को याद कराना है। पिछले एक पाठ में[15] हमने ध्यान दिया था कि कलीसिया ने परमेश्वर के मूल उद्देश्य को पूरा किया। इस्राएल के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्दों का इस्तेमाल अब कलीसिया के लिए होता है: कलीसिया ''परमेश्वर के मोल लिए हुए'' (इफिसियों 1:14) और परमेश्वर की ''पवित्र प्रजा'' (1 पतरस 2:9) है। अब्राहम अब ''सब विश्वास करने वालों का पिता'' है

(रोमियों 4:11); कलीसिया को ''परमेश्वर का इस्राएल'' (गलातियों 6:16); और ''असली खतना'' उन्हीं का कहा गया है, ''जो परमेश्वर की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते'' (फिलिप्पियों 3:3)। इसलिए यह समझते हुए कि यीशु के जन्म से पहले वह स्त्री *शारीरिक इस्राएल* थी और उसके स्वर्ग पर उठाए जाने के बाद वह स्त्री *आत्मिक इस्राएल* अर्थात कलीसिया है, हम ''इस्राएल'' के सामान्य शब्द को सुरक्षित रूप से पहचान सकते हैं।

लियोन मौरिस ने कहा है कि ''आरम्भिक मसीहियों के लिए पुराने इस्राएल और कलीसिया अर्थात वास्तविक इस्राएल में निरन्तरता बनाना आवश्यक था।''[16] एडवर्ड मायर्स ने स्त्री को ''दोनों वाचाओं में परमेश्वर के लोगों'' के रूप में पहचाना,[17] जबकि ब्रूस मैज़गर ने उसे ''पहले यहूदी रूप में, ... फिर मसीही के रूप में परमेश्वर के लोगों का आदर्श समाज'' कहा।[18]

मेरा मानना है कि यह तर्कसंगत व्याख्या है कि वह स्त्री किसका प्रतिनिधित्व करती है, परन्तु मैं यह कहने में उतावली करता हूं कि सही-सही पहचान का इतना महत्व नहीं है। अधिक महत्व उसके और अजगर के बीच अन्तर का है। जितनी सुन्दर वह स्त्री थी, उतना ही कुरूप पशु इस सुन्दर परन्तु भेद्य प्राणी के आगे झुक गया।[19]

शत्रु की चतुराइयां: अजगर (आयतें 3, 4)

> और एक और चिह्न स्वर्ग पर दिखाई दिया, और देखो; एक बड़ा लाल अजगर था जिस के सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे। और उसकी पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई[20] को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया (आयतें 3, 4क)।

इस भीषण प्राणी की तस्वीर बनाने की कोशिश करते हुए पहले तो अपने मन से परी कथाओं वाली पुस्तकों में देखे अजगरों की तस्वीरों को निकाल दें। इसके बजाय सात सौ सिरों और रेंगती टांगों वाले एक विशाल जीव की कल्पना करें।[21]

स्त्री की पहचान के बारे में हमें अनुमान लगाने पड़े थे, परन्तु अजगर के बारे में अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं है। 12:9 में उससे ''पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है'' बताया गया है (देखें 20:2)।

टीकाकार अजगर के विवरण में दी गई बातों का छिपा अर्थ ढूंढने की कोशिश करते हैं,[22] परन्तु मूल रूप में हर पहलू हमारे भयानक शत्रु की तस्वीर के कुल प्रभाव को बढ़ाता ही है:[23]

वह *अजगर* है: ''बाइबल का हो या बाइबल से बाहर का, अपोकलिप्टिक साहित्य में अजगर को बुराई को दर्शाने वाली आम आकृतियां माना जाता है।[24] वह उस सब का, जो बुरा, खराब, विनाशकारी और परमेश्वर का विरोधी है, प्रतिनिधित्व करता है।''[25]

वह *लाल* अगजर है: खून जैसा उसका लाल रंग उसकी हत्यारी प्रवृत्तियों (6:4) और

उसके पापपूर्ण स्वभाव (यशायाह 1:18) का संकेत है।

वह *सात सिरों वाला*[26] अजगर है: सात सिर सम्भवतया उसकी धूर्तता और चतुराई को दर्शाते हैं (2 कुरिन्थियों 11:3)।[27] उसके कई सिर होना इस बात का भी संकेत हो सकता है कि उसे नष्ट करना कठिन है।[28]

वह *दस सींगों वाला*[29] अजगर है: सींग सामर्थ का प्रतीक था। दस सींग उसकी बड़ी शक्ति का संकेत हैं।[30]

वह *सात मुकुटों वाला* अजगर है: ''... और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे।'' ''राजमुकुट'' उस यूनानी शब्द का लिप्यंतरण है जिसका अर्थ ''राजसी मुकुट'' है (*stephanos* अर्थात विजय के मुकुट से अलग)।[31] सात मुकुट अजगर के बड़े अधिकार का संकेत हैं।[32]

वह *बड़ा* अजगर है: ''उसके बड़े आकार का सुझाव इस टिप्पणी से दिया जाता है कि आकाश में झुकने पर उसकी पूंछ के झटकने से एक तिहाई तारे घिसटकर पृथ्वी पर गिर गए।''[33] कुछ लोगों को इस कार्य में सांकेतिक महत्व दिखाई देता है,[34] परन्तु सम्भवतया यह ''उसकी मांसपेशियों के मुड़ने से अधिक कुछ नहीं है,''[35] जिन्हें यह प्रभाव देने के लिए बनाया गया कि वास्तव में यह भयानक शत्रु है।

एक बार फिर, दिए गए विवरण से फंस न जाएं। 1 से 4 आयतों में देखते हुए, अन्तर पर ध्यान लगाएं, एक ओर तो स्पष्टतया एक असहाय स्त्री है। दूसरी ओर कई सिरों वाला, भयानक विशाल लाल अजगर है, उसकी छोटी और चमकदार आंखें स्त्री पर लगी हुई हैं जिसे जनने की पीड़ाएं लगी हुई हैं और बच्चे को जन्म देते ही वह उस पर झपट पड़ने को तैयार है।[36] (स्त्री और अजगर का चित्र देख।) असहाय और अतिशक्तिशाली के बीच में सबसे बड़ा अन्तर कभी था तो वह यही है! इस दृश्य को देखने वाला आम व्यक्ति यही कहेगा कि स्त्री और उसके बच्चे के बचने का कोई चांस नहीं है। इसका परिणाम बहुत पहले से जाना हुआ लगा।

खतरनाक शत्रु (12:7, 9, 10)

मैं कुछ मिनटों के लिए वहां के कार्य को रोककर ''बड़े लाल अजगर'' की तस्वीर निकट से दिखाने के लिए बड़ी करने लगा हूं। याद रखें कि युद्ध का पहला नियम अपने शत्रु को जानना होता है और अध्याय 12 उन्हें जो हमें नष्ट करना चाहता है, जानने के लिए अच्छा पद्य है। ''इस अध्याय में शैतान के नाम वचन में कहीं भी और दिए नामों से अधिक मिलते हैं।''[37] 7, 9 और 10 आयतों में आगे देखें जहां शैतान और उसकी गतिविधि का विवरण दिया गया है:

शत्रु को कम न समझें

आयतें 7 और 9 हमें बताती हैं कि शैतान के ''स्वर्गदूत,'' अर्थात आत्मिक दूत, उसके अधीन हैं। (देखें मत्ती 25:41.)

9 और 10 आयतों में कई नाम मिलते हैं। पहले उसे ''पुराना सांप'' कहा गया है (आयत 9) यह हमें उत्पत्ति 3 का स्मरण कराता है और बताता है कि हव्वा को आज्ञा न मानने के लिए किसी साधारण सांप ने नहीं बल्कि शैतान ने बहकाया था।[38] उस सारी पीड़ा और कष्ट पर विचार करें जो पाप के कारण संसार में आई है। इस सब का ज़िम्मेदार शैतान है।

अजगर को ''इबलीस'' भी कहा गया है।[39] अनुवादित शब्द ''इबलीस'' यूनानी के *diabolos* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''आरोप लगाने वाला'' या ''निन्दा करने वाला'' है।[40] इसी कारण आयत 10 में उसका परिचय ''हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला जो दिन-रात हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाता है'' के रूप में कराया गया है। सम्भवतया इस पर सबसे अच्छी व्याख्या अय्यूब के पहले दो अध्याय हैं, जिनमें शैतान को नीच उद्देश्यों के लिए अय्यूब पर परमेश्वर की आज्ञा मानने का आरोप लगाते दिखाया गया है। (देखें जकर्याह 3:1.) मैरिल टैनी ने अवलोकन किया है कि शैतान ''मसीही व्यवहार में कमियां उन्हें सुधारने के लिए नहीं, बल्कि बदनाम करने और विश्वासी कहलाने वालों को अपमानित करने के लिए ढूंढ़ता है।''[41] हम सब में धब्बे और झुर्रियां हैं (इफिसियों 5:27; देखें रोमियों 3:23), जिस कारण शैतान के लिए उन बातों में कमियां ढूंढ़ना कठिन नहीं है, जिनसे वह हम में से हर किसी पर आरोप लगा सके।[42]

फिर अजगर को ''शैतान'' कहा गया है (आयत 9)। ''शैतान'' यूनानी भाषा के शब्द *satanas* का अनुवाद है, जिसका अर्थ ''विरोधी'' है।[43] शैतान हमारा शत्रु, हमारा विरोधी अर्थात प्रतिद्वंद्वी है।

अजगर के काम के बारे में कहा गया है कि वह ''सारे संसार को भरमाने वाला है'' (आयत 9)। उसका काम भरमाना है (यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 4:4; 11:14)। उसने यहूदा को भरमाया (यूहन्ना 13:2, 27; लूका 22:3) और परतस को भरमाने की कोशिश की (लूका 22:31)। उसने हनन्याह और सफीरा को भरमाया (प्रेरितों 5:3) और हम सबको भरमाने की कोशिश करता है। (देखें मत्ती 13:39; लूका 8:12; इफिसियों 6:11; 2 कुरिन्थियों 2:11.)

भरमाने का शैतान का सबसे सफल प्रयास यह ''जटिल'' विश्वास है कि वह केवल मिथ्या, अर्थात अन्धविश्वासी लोगों की कल्पना है। हम चाहते हैं कि काश ऐसा ही होता, परन्तु ऐसा है नहीं। बाइबल फिर भी चेतावनी देती है, ''सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8)। हम अपने शत्रु की उपेक्षा करने या उसे कम समझने का साहस नहीं करते!

शत्रु को अनावश्यक महत्व न दें

दूसरी ओर शैतान को अनावश्यक महत्व भी न दें। अर्ल पाल्मर ने टिप्पणी की है:

> यह बहुत आवश्यक है कि वैश्विक बुराई अर्थात शैतान की शक्ति को अनावश्यक महत्व न दिया जाए। बुराई उतनी भारी होती नहीं जितनी दिखाई देती है। इसमें धमकियों और प्रतिज्ञाओं का परदा रहता है, जिन्हें यह पूरा नहीं कर

> सकती। शैतान द्वारा परीक्षा लिए जाने का यह सार है। हानि पहुंचाने की शैतान की शक्ति को वास्तविकता से अधिक मानकर हम उसकी परीक्षा में वैसे ही गिर जाते हैं जैसे हम हमारी सहायता के लिए उसकी विलासितापूर्ण प्रतिज्ञाओं के समय भरोसा करने पर। ये दोनों ही बातें गलत हैं, ...[44]

स्पष्टतया कुछ लोगों को शैतान का विरोध करने की कोशिश करना व्यर्थ लगता है। दांतों तले जीभ दबाते हुए ''शैतान ने मुझसे करवा दिया'' का बहाना आमतौर पर सुनने को मिलता है, जिससे यह प्रभाव जाता है कि उसकी पेशकश को ठुकराना सम्भव नहीं है। वचन यहां पर स्पष्ट करता है कि शैतान शक्तिशाली तो है, परन्तु वह सर्वशक्तिशाली नहीं है और निश्चय ही ऐसा भी नहीं कि उसका सामना न किया जा सके। पवित्र शास्त्र फारसी द्वैतवाद अर्थात भलाई और बुराई की संतुलित शक्तियों को उससे बड़ी शक्ति बताता है। शैतान उस परमेश्वर से जिसकी हम सेवा करते हैं, असीम रूप से कम है।

उसके सात सिर हो सकते हैं और वह बहुत चतुर हो भी होगा; परन्तु स्पष्टतया उसे परमेश्वर की योजनाओं का विरोध करने की व्यर्थता की समझ नहीं है (12:4, 5, 7–10)। वह सर्वज्ञ नहीं है।

हो सकता है कि उसके दस सींग हों और वह एक तिहाई तारों को गिरा सकता हो; परन्तु वह *उतने* तारों को नहीं गिरा सकता जितने परमेश्वर गिरा सकता है (6:13)। वह सर्वशक्तिमान नहीं है।

हो सकता है कि उसके पास ''राजमुकुट'' हों परन्तु उसका अधिकार केवल अस्थाई है। अन्त में ''बहुत से राजमुकुट'' (19:12) केवल यीशु के होंगे, जो ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' है (19:16)!

हम और भी जोड़ सकते थे कि शैतान को कहीं सर्वव्यापक नहीं दिखाया गया (देखें अय्यूब 2:2)। मनुष्यजाति की गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए उसे अपने सहायकों पर निर्भर रहना पड़ता है (आयतें 7, 9)।

अपने शत्रु को जानें: जानें कि वह भयानक और डरावना है और चौकस है, परन्तु यह भी जान लें कि परमेश्वर की सहायता से उसे हराया जा सकता है। याकूब ने कहा, ''इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पाप से भाग निकलेगा'' (याकूब 4:7)। हमारे अगले पाठ में ज़ोर दिया जाएगा कि शैतान पर विजय वही लोग पाएंगे जो परमेश्वर के विश्वासयोग्य हैं (प्रकाशितवाक्य 12:11)।

घबराया हुआ शत्रु (12:4-6)

हमारा परिचय अपने शत्रु से कराया गया है, परन्तु अभी तक यह नहीं बताया गया कि वह हम से इतनी घृणा क्यों करता है या वह हमारे विनाश पर क्यों इतना तुला हुआ है। बहुत *घबराए हुए* शत्रु का चित्रण करती अगली कुछ आयतों में इसकी व्याख्या मिलने लगती है।

घबराहट नंबर 1 (आयतें 4, 5)

आयत 4 के अन्त में ''वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ, कि

जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए'' (आयत 4ख)। ऐसा कोई कारण नहीं लगा कि शैतान अपना उद्देश्य पूरा न कर पाए। जन्म के समय, जच्चा और बच्चा दोनों ही असहाय और उसके रहम पर थे। कार्य के दोबारा होने पर परमेश्वर के हस्तक्षेप पर चकित होने को तैयार रहें।

आयत 5 का पहला भाग बालक के जन्म की बात बताते हुए उसका परिचय कराता है: ''और वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए हुए, सब जातियों पर राज करने पर था''[45] (आयत 5क)। ''लोहे का दण्ड लिए हुए'' जातियों पर राज करने का हवाला भजनसंहिता 2 से ली गई है जिसे आमतौर पर नये नियम के लेखकों द्वारा यीशु पर लागू मसीहा का भजन कहा जाता है (प्रेरितों 13:33; इब्रानियों 1:5; 5:5)। पहले 2:26-28 पर चर्चा करते हुए हमने इस भजन का हवाला दिया था जहां यीशु ने प्रतिज्ञा की कि उसकी आज्ञा मानने वाले सब लोग उसके साथ राज करेंगे। फिर अध्याय 19 में यीशु के बारे में लिखा गया है, ''और जाति-जाति को मारने के लिए उसके मुंह से एक चोखी तलावार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज करेगा, ...'' (आयत 15)।[46] इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं लगती कि 12:5 वाला लड़का यीशु ही है।

अंग्रेज़ी बाइबल में असामान्य वाक्य रचना ''बेटा, नर, बालक'' पर ध्यान दें! यूनानी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में ''बेटा'' का अर्थ नर बालक ही है। ''नर'' शब्द का जुड़ना व्यर्थ लगता है, परन्तु पैदा होने वाले के लिए इब्रानी भाषा में लड़के पर ज़ोर देने का यही ढंग है। वाक्यांश के विषय में अलबटरस पेयटर्स ने लिखा है, ''बोलचाल के वाक्यांश से लेकर हम उसकी गहराई को समझकर इसका अनुवाद ... बेटा अर्थात मर्द कर पाएंगे! मसीह के पुरुषत्व का दावा प्रबल, लगभग भीषण है; ...''[47]

सदियों पहले यशायाह नबी ने लिखा था ''क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा'' (यशायाह 9:6; देखें 7:14)। प्रकाशितवाक्य 12:5 पर यशायाह की भविष्यवाणी के पूरा होने का एक नाटकीय पूर्व दृश्य है। यह हमें यीशु के जन्म का अर्थात वैश्विक प्रभावों वाले उस अदभुत जन्म का स्मरण कराता है।[48]

बच्चे के जन्म लेते ही खा जाने को तैयार अजगर की बात पर विचार करते हुए हमारा ध्यान बैतलहम में हेरोदेस द्वारा बच्चों की हत्या की ओर जाता है (मत्ती 2:16)। कौन इस बात से इनकार कर सकता है कि उस दुष्कर्म में अजगर/शैतान का ही हाथ था? परन्तु हमें उस एक विफल प्रयास में नर बालक को नष्ट करने के शैतान के प्रयासों को अन्तिम नहीं मानना चाहिए। पृथ्वी पर यीशु की पूरी सेवकाई के दौरान शैतान उसे नष्ट करने के प्रयास करता रहा (मत्ती 4:1; 16:23; लूका 22:3, 31)। शैतान के प्रयास यीशु की मृत्यु में चरम पर पहुंच गए (लूका 22:53)।[49]

क्या शैतान सफल हो गया? उसके प्रयासों की व्यर्थता का चित्रण बहुत कम शब्दों में मिलता है: ''उसका बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर

पहुंचा दिया गया'' (आयत 5क)। ''उठाकर'' उस यूनानी शब्द का अनुवाद है, जिसका अर्थ ''छीनना'' होता है, जो अचानक और अनापेक्षित कार्य का संकेत है। यूजीन पीटरसन ने इस दृश्य का विवरण दिया है: ''बालक के आते ही, अजगर झपट पड़ता है। उस अत्याचार को देखकर अति भयभीत हुए हम आंखें बन्द कर लेते हैं। और फिर अन्तिम सम्भावित क्षण में बचाव होता है। उस अबोध बालक को पकड़कर परमेश्वर के सिंहासन पर उठा लिया जाता है।''[50]

फिर यह विवरण तेज़ी से यीशु के जन्म से उसके स्वर्गारोहण पर आ जाता है।

> अपनी कलम को कुछ ही बार चलाते हुए, यूहन्ना परमेश्वर के पुत्र के देह में प्रवेश करने से एकदम उसके स्वर्गारोहण पर चला गया। उसका ऐसा करना सही है, क्योंकि प्रकाशितवाक्य में उसका उद्देश्य पृथ्वी पर यीशु के जीव तथा सेवकाई का विस्तृत विवरण देना नहीं था। यह उसने ससमाचार के अपने विवरण में पहले ही कर लिया है।[51]

वारेन वियर्सबे ने यह व्यंग्यपूर्ण विचार जोड़ा है: ''आयत के बीच लगा कॉलन इतिहास के तीस वर्षों को दर्शाता है!''[52]

घबराहट नंबर 2 (आयत 6)

असम्भव तो लगा था, परन्तु वह बच्चा अजगर की पकड़ से बच गया था! चिढ़े हुए पशु ने अपना ध्यान स्त्री की ओर मोड़ा (12:13)। याद रखें कि पशु की शक्ति की तुलना में वह कितनी असहाय लग रही थी। उसके लिए स्त्री को मार देना बहुत आसान काम होना चाहिए था; तौ भी फिर से अजगर विफल हो गया था: ''और वह स्त्री उस जंगल को भाग गई, जहां परमेश्वर की ओर से उसके लिए एक जगह तैयार की गई थी, कि वहां वह एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक पाली जाए[53]'' (आयत 6)।

''जंगल'' पर चर्चा हम 12:14 में पहुंचने पर करेंगे।[54] अभी के लिए ध्यान दें कि यह जगह '' *परमेश्वर की ओर से* उसके लिए तैयार की गई'' थी। जैसे परमेश्वर ने उसके बेटे की रक्षा की वैसे ही वह उसकी कलीसिया की रक्षा करता है। एक विशेष ''जगह'' पर परमेश्वर ने अपने लोगों को ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक'' पाला और उनकी रक्षा की। (आप ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन'' को ''3-1/2 वर्ष'' के रूप में पहचान लेंगे, जो परीक्षा, कठिनाई और परख से जुड़ा सांकेतिक अंक है, जिसमें कल के लिए आशा का संकेत भी है[55])

1 से 6 आयतों को सरल शब्दों में कहें तो अजगर अपने हर प्रयास से निराश था। उसकी कोई भी योजना सिरे नहीं चढ़ी। उसकी परेशानी बढ़ने के साथ-साथ उसका प्रकोप भी बढ़ गया।

क्रोध में आया शत्रु (12:7-17)

अगले पाठ में हम अजगर को ''स्वर्ग में लड़ाई'' में हारा हुआ देखेंगे (आयत 7)।

इससे उसकी परेशानी और उसका क्रोध और बढ़ जाएगा। अध्याय 12 की अन्तिम पंक्ति इस प्रकार कहती है, ''तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, ...'' (आयत 17क)। शैतान के *आपसे* घृणा करने और *आपको* नष्ट करने के प्रयास का कारण बताने का यह महत्वपूर्ण भाग है। वह बेकाबू बैल की तरह है, जो इस तलाश में है कि किसेसे अपने सींगों पर उठा ले।

सारांश

उस चर्चा के शेष भाग को हम अगले पाठों के लिए छोड़ देंगे। इस प्रस्तुति में हमारा मुख्य उद्देश्य अपने शत्रु का छोटा-सा रेखाचित्र देना था। आरम्भिक मसीहियों के लिए इस बात से अवगत होना आवश्यक था कि उनकी समस्या का कारण वास्तव में रोम नहीं, बल्कि शैतान था। आपको और मुझे यह समझना आवश्यक है कि हमारे सामने जो भी परीक्षाएं हैं उन सबको पीछे से शैतान ही चला रहा है।

हमें चाहिए कि अपने शत्रु को कमज़ोर न समझें। वह भयानक है। इसके साथ ही हमें उससे डरना नहीं चाहिए। परमेश्वर ने उस नर बालक की सहायता की, उसने स्त्री की सहायता की और वह हमारी भी सहायता करेगा, यदि हम उसके निकट रहकर उस पर भरोसा रखें । पहले मैंने याकूब 4:7 के अन्तिम भाग में से दोहराया था, जहां लिखा है, ''शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।'' इस आयत का पहला भाग उस सामना करने का तरीका बताता है: ''परमेश्वर के अधीन हो जाओ।'' पौलुस ने कहा, ''न ही शैतान को जगह दो'' (इफिसियों 4:27; KJV)। यदि हम प्रभु की सामर्थ पर निर्भर रहे (इफिसियों 6:10) न कि अपनी पर, तो अभी के लिए उसकी आज्ञा मान सकते हैं।

तो फिर प्रश्न यह है कि ''आप प्रभु के कितना निकट हैं?'' यदि आपने उसे ग्रहण नहीं किया है या यदि आप उसके पास से भटक गए हैं तो उसकी आज्ञा मानने का समय अभी है ताकि वह आपको ''उस दुष्ट से'' छुड़ा ले (मत्ती 6:13; NIV)।[56]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

अध्याय 12 वाली स्त्री की प्राकृतिक सुन्दरता अध्याय 17 वाली वेश्या की बनावटी चमक से अलग है। एक चार्ट बनाएं, जिसमें उस अन्तर को दिखाया गया हो। आरम्भ करने के लिए कुछ विचार इस प्रकार है: (1) पहली ज्योति में रहती है; दूसरी अन्धकार में रहती है। (2) पहली स्वर्गीय है, जबकि दूसरी सांसारिक। (3) पहली पीड़ा से छटपटाती है, जबकि दूसरी नशे में है। (4) पहली शहीदों की माता है, जबकि दूसरी वेश्याओं की जननी है। (5) पहली भलाई को जन्म देती है, जबकि दूसरी बुराई को। (6) पहली बुराई की शिकार है, जबकि दूसरी बुराई के साथ मिली हुई है। (7) पहली असहाय दिखाई दे रही है परन्तु बच जाती है; दूसरी शक्तिशाली दिखाई देती है परन्तु नष्ट हो जाती है।

यदि आप में कलात्मक क्षमता है तो सिखाते समय बोर्ड पर कुछ दृश्यों के रेखाचित्र बनाए जा सकते हैं। ऑस्ट्रेलिया में मेरे एक छात्र द्वारा बनाया अध्याय 12 की आरम्भिक

आयतों का चित्रण नीचे दिया गया है:

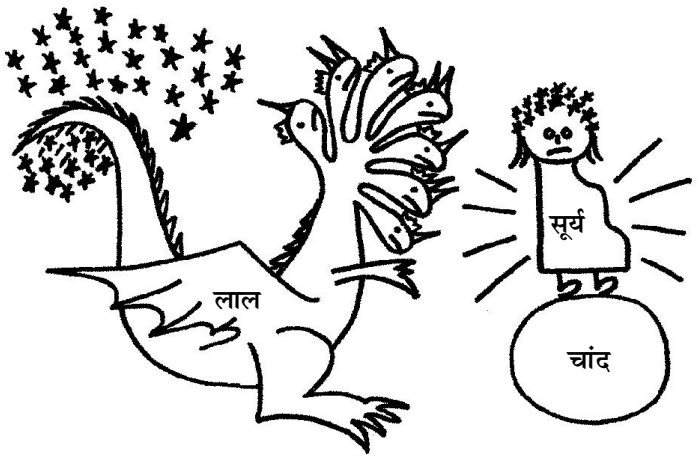

अलग-अलग क्रमों में क्रमबद्ध किए शब्दों ''स्त्री, अजगर और बच्चा'' में इस पाठ का सबसे प्रसिद्ध शीर्षक है। अध्याय 12 का एक शीर्षक शैतान को ''जीवित और पृथ्वी पर अच्छा भला'' दिखाया जा सकता है। ''लोगों का शत्रु नंबर 1'' या ''मसीही शत्रु नंबर 1'' वाक्यांश का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

वेस्ट ने अध्याय 12 को ''शेष भविष्य'' कहा जबकि राबर्ट मुल्होलैंड ने कहा कि यह ''बड़ी तस्वीर'' देता है। अन्यों ने इसे ''हमारी नज़र के पार आत्मिक युद्ध'' या ''दृश्यों के पीछे का युद्ध'' कहा है। माइकल विल्कोक ने कहा कि यह अध्याय ''एक आत्मिक नाटक'' को दिखाता है। उसी ढंग का इस्तेमाल करते हुए आप इस अध्याय को इस प्रकार विभाजित कर सकते हैं: (1) पात्र (आयतें 1-3, 5); (2) कथानक (आयतें 1-6); (3) नाटक (आयतें 7-16); (4) उपसंहार (आयत 17)।

वियर्सबे ने ''खतरनाक तीन का समूह'' शीर्षक से अध्याय 12 और 13 की व्याख्या की है।

मसीहा को युगों से संसार में आने से रोकने के शैतान के प्रयासों पर विलियम हैंड्रिक्सन के नोट्स में अपने आप ही प्रवचन बन जाता है।[7]

टिप्पणियां

[1]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में रूपरेखा और अध्याय 12 पर नोट्स देखें। शत्रु पहले दृश्य में केवल एक बार आए और फिर बाद में उन्हें उल्टे पांव दृश्य से भगा दिया गया। [2]प्रकाशितवाक्य में तीन बार इस शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर की ओर से विशेष प्रकाशन बताने (12:1, 3; 15:1) और चार बार

शैतान के सहायकों द्वारा भ्रमित करने वाले चिह्नों को बताने के लिए किया गया है (13:13, 14; 16:14; 19:20)। यह तथ्य कि परमेश्वर ने इस शब्द का इस्तेमाल विशेष रूप से सुसमाचार के यूहन्ना के वृत्तांत और प्रकाशितवाक्य में किया, एक और संकेत है कि प्रेरित यूहन्ना अपोकलिप्स का लेखक था। [3]ये निश्चयात्मक शब्द डब्ल्यू. बी. वेस्ट, जूनि., *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासेस,* संपादक बॉब प्रिचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 85 और सी. जी. विल्के एंड विलिबर्ड ग्रिम्म, *''semeion'' ए ग्रीक इंग्लिश लैक्शन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनुवाद व संशोधन जोसेफ एच.थेयर (एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, तिथि नहीं), 573. [4]वेस्ट, 87. विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 74 सहित कई अनुवादों में आयत 1 में ''स्वर्ग'' को ''आकाश'' दिखाया गया है। [5]यह वाक्य मार्टिन किड्डुल *द रैवलेशन आफ सेंट जॉन,* द मौफ़ट न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री सीरीज़ (न्यू यार्क: हार्पर एंड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1940), 219 और जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एड्म एंड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 149 से लिया गया था। [6]उदाहरण के लिए वचन में परमेश्वर को सूर्य से मिलाया गया है (भजन संहिता 84:11); और प्रकाशितवाक्य में यीशु का चेहरा सूर्य की तरह चमकता है (1:16)। इसी कारण इस स्त्री का परमेश्वर और यीशु से विशेष सम्बन्ध है। एक दिलचस्प व्याख्या में तारों को पुरखाओं के युग से, चांद को यहूदी युग से और सूर्य को मसीही युग से मिलाया गया है। ''टू मच्च इंटरप्रिटेशन कैन बी एज़ डेंजरस एज़ टू लिटल'' (अर्ल पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एंड रैवलेशन,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 [डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982], 199)। तो भी दो विवरण महत्वपूर्ण लगते हैं: (1) स्त्री द्वारा पहना मुकुट *stephanos* है, जो विजय का मुकुट है। (2) ''बारह'' अंक में सम्पूर्णता का विचार पाया जाता है। (इस पाठ में बारह तारों का उल्लेख देखें।) [7]यदि आप इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास में करते हैं तो रुककर क्लास के लोगों से पूछें कि उन्हें आयत 1 से क्या प्रभाव मिलता है। [8]इस विवरण का कुछ भाग यूजीन एच. पीटरसन, *रिवर्सड थंडर* (सेन फ्रांसिस्को: हार्परकोलिंस पब्लिशर्स, 1988), 119 से लिया गया है। [9]बाद में हम सुझाव देंगे कि अध्याय के अन्तिम भाग में स्त्री कलीसिया है। इस सम्भावना ने कई लेखकों को यह टिप्पणी करने के लिए उकसाया है कि संसार के दृष्टिकोण से कलीसिया आकर्षित नहीं थी, परन्तु परमेश्वर के दृष्टिकोण से वह सुन्दर थी। [10]मायर पर्लमैन, *विंडोज़ इनटू द फ़्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (स्प्रिंगफ़ील्ड, मिज़ोरी: गॉस्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941), 99.

[11]अनुमानों में हवा, बुद्धि, पवित्र आत्मा और परमेश्वर को भी मिलाया गया है। [12]जी. आर. बिसले-मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 198. कई कैथोलिक घरों में मरियम की तस्वीरें मिलती है, जिनमें प्रकाशितवाक्य 12:1 के प्रतीक की झलक मिलती है। [13]बार्कले, 76. [14]गिलेस क्विसपैल, *द सीक्रेट बुक ऑफ़ रैवलेशन* (न्यू यार्क: मैक्ग्रा-हिलबुक कं., 1979), 77. [15]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 4'' में पाठ ''तूफ़ान के बीच शांति'' में देखें। [16]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 153. [17]एडवर्ड पी. मायर्स, *आफ़्टर दीज़ थिंग्स आई सॉ: ए स्टडी ऑफ़ रैवलेशन ऑफ जॉन* (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1997), 216. [18]ब्रूस एम. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 74. [19]इस वाक्य के अन्तिम शब्द पीटरसन, 120 से लिए गए थे। [20]''एक तिहाई'' भाग के सांकेतिक महत्व के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' ''यहां अजगर होंगे!'' पाठ में ''एक तिहाई'' भाग पर टिप्पणियां देखें। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 3'' में ''परमेश्वर की बुलाहट'' पाठ में ''एक तिहाई'' पर टिप्पणियां भी देखें।

[21]आयत 9 में उसे *सांप* कहा गया है और आयत 4 में वह *खड़ा हुआ*। [22]आमतौर पर यह इस बात को ध्यान में रखकर किया जाता है कि सात सिरों, दस सींगों और अन्य विशेषताओं का पहले पशु के सम्बन्ध में क्या अर्थ है। अजगर और पहले पशु में कई बातें मिलती-जुलती हैं, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि हम पशु से निष्कर्ष निकालकर उसे अजगर पर लागू करें। [23]यदि आप इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास में करते

हैं तो आप पूरी क्लास से पूछ सकते हैं कि 3 और 4 आयतों में दिखाए गए अजगर का उन पर क्या प्रभाव पड़ा है। [24]पुराने नियम में ''अजगर'' शब्द के इस्तेमाल के दो उदाहरणों के लिए देखें यशायाह 27:1; 51:9. नये नियम में अजगर का उल्लेख केवल प्रकाशितवाक्य में है। [25]रूबल शैली, *द लैंब एण्ड हिज़ एनिमीज़ : अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सैंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन, 1983), 71. [26]''सात'' अंक के सांकेतिक महत्व के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 52 पर देखें। याद रखें कि यह केवल संकेत है। 16:13 में अजगर को *सात सिरों* वाला होने के बावजूद *एक मुंह* वाला दिखाया जाएगा! [27]कुछ लोगों का मानना है कि सिर मानसिक क्षमता के बजाय सामर्थ को दिखाते हैं। [28]यूनानी मिथ्या में कई सिरों वाले हाइड्रा पशु को मारना बहुत कठिन था। एक सिर को मारने पर दूसरा सिर हमला कर देता था। [29]''दस'' अंक के सांकेतिक महत्व के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 52 देखें। प्रश्न: *सात* सिरों पर आप *दस* सींगों को कैसे लगा सकते हैं? उत्तर: जैसे भी चाहें लगा सकते हैं क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। ये सब संकेत हैं। [30]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में मेमने के सात सींगों पर टिप्पणियां देखें। मेमने की सामर्थ अजगर की सामर्थ से अलग हैं क्योंकि मेमने के स्वभाव में सामर्थ है और यह स्थाई है; अजगर की सामर्थ परमेश्वर की अनुमति से मिली है और यह अस्थाई है।

[31]KJV में यहां केवल ''मुकुट'' है। नये नियम में और पूरे प्रकाशितवाक्य में ''डायाडीम'' शब्द केवल तीन बार मिलता है: 12:3; 13:1; 19:12. [32]मत्ती 12:24; यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11; इफिसियों 2:2 में शैतान का वर्णन करते शब्दों का इस्तेमाल देखें। [33]मैज़गर, 73. [34]इस कार्य में कुछ लोग प्रभावशाली लोगों पर शैतान की शक्ति की बात देखते हैं। अन्यों का विचार है कि यह परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के समय अन्य स्वर्गदूतों को शैतान द्वारा भटकाने की बात है। [35]मौरिस, 154. [36]कुछ लोग चकित होते हैं कि अजगर ने बच्चे के जन्म से पहले ही स्त्री को निगल क्यों नहीं लिया जिससे वही उद्देश्य पूरा हो सकता था। यह अध्याय 12 के संकेत से बाहर है। परन्तु वास्तव में शैतान ने स्त्री (इस्राएलियों) को मसीहा को जन्म देने से कई बार रोकने की कोशिश *अवश्य की*। (देखें 1 शमूएल 19:1; 2 राजा 11:1, 2; एस्तेर 3:13.) यह योजना सिरे नहीं चढ़ी, जिस कारण शैतान की ''दूसरी योजना'' मसीहा को ही नष्ट करने की थी। [37]फ्रैंक पैक, *प्रकाशितवाक्य,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 4. [38]उत्पत्ति 3 वाला सर्प या तो शैतान द्वारा इस्तेमाल किया गया सांप था या स्वयं शैतान, जो सांप के रूप में आया था। [39]अंग्रेज़ी के कई अनुवादों में शैतान के लिए ''devil'' को सामान्य संज्ञा (छोटी ''d'' से आरम्भ होने वाला), जबकि "Satan" व्यक्तिवाचक संज्ञा (बड़े ''S'' से आरम्भ होने वाला) दिखाया जाता है। इस प्रकार के अन्तर का कोई महत्व नहीं है। [40] KJV में भी यूनानी शब्द *(daimonion)* ''दुष्ट आत्मा'' को ''शैतान'' या डैविल अनुवाद किया गया है, जो उलझाने वाला है क्योंकि शैतान तो केवल एक है (NKJV अर्थात न्यू किंग्स जेम्स वर्ज़न में "devils" के बजाय "demons" है)। डीमन्स या दुष्ट आत्मा शैतान के सहायक है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में पृष्ठ 201 पर अतिरिक्त लेख ''दुष्ट आत्माएं: दुष्ट अलौकिक जीव'' देखें।)

[41]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक आफ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 27, 63. [42]अगले पाठ में हम देखेंगे कि क्रूस के बाद से शैतान को ''भाइयों पर आरोप'' लगाने में कहां तक सीमित कर दिया गया है। [43]मूलत: *किसी भी* विरोधी की बात करने के लिए इस शब्द का इस्तमोल सामान्य ढंग से हुआ है। (गिनती 22:22; 1 शमूएल 29:4; 1 राजा 5:4; 11:14, 23 में इस शब्द का इस्तेमाल मूल अर्थ में हुआ है।) अन्तत: यह मनुष्यजाति के उस बड़े विरोधी के अर्थ में सीमित हो गया और व्यक्तिवाचक नाम बन गया। [44]पाल्मर, 188. [45]अनुवादित शब्द ''राज करने'' का मूल यूनानी शब्द ''चरवाहा'' के लिए है। भजनसंहिता 23 सम्भवतया इस पर अच्छी व्याख्या है। चरवाहे उनके प्रति, जिनकी वे देखभाल करते थे, कोमल होते थे, परन्तु उनके झुंडों को हानि पहुंचाने वालों के प्रति बेरहम होते थे। लोहे के डंडे का उद्देश्य झुंड के शत्रुओं को दण्ड देना था। [46]11:18 में पहले हमने भजनसंहिता 2 का हवाला दिया था। पिछले भाग में इस आयत पर नोट्स देखें। विशेषकर पिछले पाठ की टिप्पणी 10 देखें, जिसमें इस भजन की

पृष्ठभूमि की जानकारी दी गई है।[47]अल्बरटस पेयटर्स, *स्टडीज़ इन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1954), 159. [48]कुछ लोगों का मानना है कि प्रकाशितवाक्य 12 वाला ''जन्म'' यीशु के शारीरिक जन्म की नहीं बल्कि उसके राज्याभिषेक की बात है। यह व्याख्या भजनसंहिता 2, रोमियों 1:4 और सम्बन्धित आयतों पर आधारित है। यह व्याख्या वचन को कोई हानि नहीं पहुंचाती और सही हो सकती है, यीशु के शारीरिक जन्म की बात अधिक स्वाभाविक व्याख्या है। [49]क्रूस पर होने वाले आत्मिक युद्ध की चर्चा हम अपने अलग पाठ में करेंगे। [50]पीटरसन, 120.

[51]शैली, 72. [52]वारेन डब्ल्यू वियर्सबे, *द बाइबल एक्पोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 602. चछ्ङ्क में सेमीकॉलन के बजाय कॉलन है। [53]यूनानी शास्त्र में मूलत: ''ताकि *वे* उसे पालें'' है (देखें चछ्ङ्क)। हमें यह नहीं बताया गया कि ''वे'' कौन थे, परन्तु ''वे'' वही होंगे जिन्हें स्त्री की देखभाल के लिए *परमेश्वर द्वारा* आज्ञा दी गई थी। [54]इस पुस्तक में आगे ''युद्ध जारी है'' पाठ देखें। [55]इस पुस्तक में ''क्या हम नाप में पूरे हैं?'' पाठ में ''3-1/2 वर्ष'' पर चर्चा देखें। [56]यदि इस पाठ का इस्तेमाल सरमन के रूप में किया जाता है तो गैर मसीहियों तथा भटके हुए मसीहियों के लिए बताएं कि प्रभु के पास आने के लिए क्या करना आवश्यक है। इस पुस्तक में ''परमेश्वर के गवाह'' पाठ में टिप्पणी 9 देखें। [57]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स,* सातवां संस्करण (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 165-70.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. 12 से 14 अध्यायों में दिए गए शत्रुओं की सूची की समीक्षा करें। इनमें से किसका परिचय अध्याय 12 में मिलता है?
2. 12:1, 2 पढ़ते हुए आपके मन में स्त्री के बारे में क्या विचार आता है?
3. स्त्री की कुछ सम्भावित पहचानों की सूची बनाएं। आपकी पसंदीदा कौन सी है?
4. 12:3, 4 पढ़ते हुए आपके मन में अजगर की कौन सी बातें आती हैं?
5. अजगर किसे कहा गया है?
6. अजगर के बारे में दी गई हर बात किस प्रकार इस शत्रु की खतरनाक शक्ति के प्रभाव को बढ़ाती है?
7. आयत 9 में शैतान के लिए इस्तेमाल किए गए नामों तथा विवरणात्मक वाक्यांशों की सूची बनाएं और उनमें से प्रत्येक का अर्थ बताएं। शैतान के स्वभाव तथा काम के बारे में इनमें से हर नाम में क्या संकेत है?
8. शैतान को *कम* समझना खतरनाक क्यों है? शैतान को अनावश्यक महत्व देना खतरनाक क्यों है?
9. आयत 5 वाला नर बालक कौन है?
10. अजगर उस बालक को निगल क्यों नहीं सका?
11. ''वह बच्चा परमेश्वर के पास उठाकर पहुंचा दिया गया'' वाक्य में बाइबल की किस घटना की बात है?

स्त्री और अजगर (12:1-4)